AKBAR PART 1

अकबर (1556-1605)

⇒ मात्र 13 वर्ष की आयु में अकबर शासक बना। बैरम खाँ उसका संरक्षक बना जो कि 1560 तक उसका संरक्षक बना रहा। उसके बाद उसे हज भेजकर अकबर ने स्वतंत्र शासन प्रारम्भ किया।

⇒ पुनः वह अपनी धाय माँ माहम अनगा के संरक्षकत्व में 2 वर्ष रहा। 1562 से उसने सभी के प्रभाव से स्वयं को मुक्त कर लिया।

⇒ हम अकबर के व्यक्तित्व की दो विशेषतायें इसमें देखेंगे — (1) साम्राज्य विस्तार अथवा विजयें
(2) राजपूत नीति

1) साम्राज्य विस्तार (Emperialism or Expansion) — x —

1) अफगानों से युद्ध :- जिस समय हुमायूँ की मृत्यु हुई अफगान पूर्णरूप से समाप्त नहीं हुये थे। बिहार के अफगान

शासक आदिल शाह और उसका सेनापति हेमू अकबर की सबसे बड़ी चुनौती थे जो इसी अवसर की तलाश में थे।

⇒ 5 नवंबर 1556 में हुये पानीपत के दूसरे युद्ध में बैरम खाँ के संरक्षण में एवं अफगानों की ओर से हेमू के सेनापतित्व में एक भीषण युद्ध हुआ।

⇒ इस युद्ध में जीतकर मुगल साम्राज्य को अब पूर्ण रूप से अफगानों को समाप्त कर दिया गया। यद्यपि छोटे-मोटे विद्रोह बाद में होते रहे।

2) मालवा पर अधिकार (1561) :- बहुत थोड़े समय के लिये हुमायूँ ने मालवा पर अधिकार किया था।

⇒ उस समय मालवा पर बाजबहादुर का अधिकार था।

⇒ अन्यायपूर्ण शासन का आरोप लगाकर अधहम खां एवं पीर मुहम्मद खां ने मालवा पर आक्रमण कर दिया और बाजबहादुर को हरा दिया। कुछ समय विस्थापित जीवन जीने के बाद बाजबहादुर ने अकबर का मनसबदार

करना स्वीकार किया।

गोंडवाना विजय (1564) → इसपर रानी दुर्गावती का शासन था। मालवा विजय के बाद अकबर का उसपर ध्यान गया।

⇒ एक सेना को 1564 में उसपर आक्रमण करने भेजा। अत्यंत वीरता से लड़ने के बाद भी बड़ी मुगल सेना के सामने उसे हारना पड़ा किन्तु स्वयं को मार लिया। इसप्रकार गोंडवाना पर भी अकबर का अधिकार हो गया।

राजस्थान के राज्य :-

राजस्थान पर अधिकार करना गुजरात विजय के लिये आवश्यक था। इसके लिये उसने विशिष्ट राजपूत नीति का उपयोग किया जिसे हम आगे पढ़ेंगे।

⇒ 1562 में जो मुईद्दीन चिश्ती की दरगाह जाने के समय आमेर के राजा भारमल

ने उसकी आधीनता मान ली थी, भारमल की मृत्यु के बाद आमेर पर मुगलों का शासन हो गया।

=> ~~[illegible]~~ इसके बाद अकबर ने मेवाड़ पर आक्रमण की योजना बनाई। क्योंकि वहाँ के राणा उदयसिंह ने बाजबहादुर को शरण दी थी।

=> अकबर ने 1568 में चित्तौड़ के किले पर आक्रमण किया। दुर्गम होरे बंदी को अत्यन्त कठिनाई से तोड़कर अंत में अकबर ने चित्तौड़ के किले को जीत लिया एवं भयंकर कत्ल किये।

=> इसके पश्चात् एक एक करके कई राजपूत गढ़ों को जीत लिया। 1569 में सुरजन हाड़ा से रणथम्भोर जीता। 1569 में ही रामचन्द्र से कालिंजर जीता।

=> 1570 में ही मारवाड़, जैसलमेर एवं बीकानेर ने स्वयं आधिपत्य स्वीकार कर लिया।

इस प्रकार पूरे राजपूताना पर अकबर का प्रत्यक्ष - अप्रत्यक्ष अधिकार

हो गया।

गुजरात विजय : (1572, 73) 1572 में अकबर राजपूताना होकर गुजरात पहुंच गया। बिना किसी बाह्य विरोध के अहमदाबाद पर कब्ज़ा कर लिया।

1573 में सूरत के किले पर घेरा डालदिया और समर्पण के लिये विवश किया। अन्य स्थानीय राजाओं ने स्वतः अधीनता स्वीकार कर ली।

बंगाल विजय (1574-76) → इस्लाम शाह की मृत्यु के बाद बंगाल स्वतंत्र हो गया था। बंगाल - बिहार लगे थे। अकबर को दोनों पर ही विजय करनी थी।

→ यहाँ पर दाऊद खां का शासन था जिसने अपने नाम का खुतबा पढ़वाना और सिक्के बनवाना प्रारंभ कर दिया था।

⇒ गुजरात के बाद अकबर ने बंगाल पर आक्रमण किया। यद्यपि इस बार संधि के द्वारा युद्ध समाप्त हुआ।

FEBRUARY 1999

20 SATURDAY ⇒ पुनः 1576 में एक और युद्ध में अकबर ने दाऊद खाँ को हराया इसे हम अफगानों के विरुद्ध अंतिम संघर्ष भी मान सकते हैं। इस प्रकार बंगाल भी अकबर के पास आ गया।

अन्य विजयें :- विजयों का यह क्रम यहीं नहीं समाप्त हुआ अकबर लगातार युद्ध और विजये करता रहा।

⇒ 1581 में हकीम मिर्जा से काबुल जीता

⇒ 1586 में युसुफ एवं याकूब खाँ से कश्मीर जीता।

⇒ 1591 में जानी बेग से सिन्ध जीता

31 Sunday

⇒ 1590-91 में निसार खाँ से उड़ीसा जीता।

⇒ 1595 में ही बलुचिस्तान और कन्धार जीता।

=) 1591 में ही दक्षिण में अली खां से खानदेश जीता।

=) 1599 में चांद बीबी से दौलताबाद जीता।

=) 1600 में अहमदनगर जीता।

एवं 1601 में असीरगढ़ का किला जीता यही अकबर की अंतिम विजय थी।

अकबर एक साम्राज्यवादी शासक था दिल्ली पर मुगल सत्ता की अस्थिरता को उसने समाप्त कर दिया एवं आगे आने वाले 250-300 वर्ष तक मुगलों की सत्ता बनी रहने की पुष्टि हो गई।